

# पाठ-२

# चार मंगल

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

 99260-40137



चत्तारि मंगलं,  
अरहंता मंगलं,  
सिद्धा मंगलं,  
साहू मंगलं,  
केवलीपणत्तो धम्मो मंगलं।





अर्थ

लोक में चार मंगल हैं

❖ अरहंत भगवान मंगल हैं

❖ सिद्ध भगवान मंगल हैं

❖ साधु (आचार्य, उपाध्याय और साधु) मंगल हैं  
❖ तथा केवली भगवान द्वारा बताया गया वीतराग  
धर्म मंगल है





प्रश्न?

आचार्य,  
उपाध्याय को  
अलग से क्यों नहीं  
लिया गया है?



# मंगल किसे कहते हैं?

A B C

- ❁ जो मोह- राग द्वेषरूपी पापों को गलावे और सच्चा सुख उत्पन्न करे
- ❁ अरहंतादिक स्वयं मंगलमय हैं
- ❁ और उनमें भक्ति भाव होने से परम मंगल होता है



लोगुत्तमा

चत्तारि लोगुत्तमा,  
अरहंता लोगुत्तमा,  
सिद्धा लोगुत्तमा,  
साहू लोगुत्तमा,  
केवलिपण्णत्तो धम्मो  
लोगुत्तमो ।







❁ लोक में चार उत्तम हैं

अर्थ

❁ अरहंत भगवान उत्तम हैं

❁ सिद्ध भगवान उत्तम हैं

❁ साधु (आचार्य, उपाध्याय और साधु) उत्तम हैं

❁ केवली भगवान द्वारा बताया हुआ वीतराग धर्म उत्तम हैं

# उत्तम किसे कहते हैं?

❁ जो सबसे महान हो ।

❁ लोक में ये चारों सबसे महान  
हैं अतः लोकोत्तम हैं ।







सरणम्  
पव्वज्जामि

चत्तारि सरणम् पव्वज्जामि,  
अरहंते सरणम् पव्वज्जामि,  
सिद्धे सरणम् पव्वज्जामि,  
साहू सरणम् पव्वज्जामि,

केवलिपण्णत्तम् धम्मम् सरणम् पव्वज्जामि।



अर्थ

❁ मैं चारों की शरण में जाता हूँ ।

❁ अरहंत भगवान की शरण में जाता हूँ,

❁ सिद्ध भगवान की शरण में जाता हूँ,

❁ साधुओं (आचार्य, उपाध्याय, और साधु) की शरण में जाता हूँ, और

❁ केवली भगवान द्वारा बताये गये वीतराग धर्म की शरण में जाता हूँ।

# शरण किसे कहते हैं?

- ❁ शरण सहारे को कहते हैं
- ❁ पंच परमेष्ठी द्वारा बताए हुए मार्ग पर चलकर अपनी आत्मा की शरण लेना ही पंच परमेष्ठी की शरण हैं





जो व्यक्ति पंच परमेष्ठी  
की शरण लेता है  
उसका कल्याण होता  
है अर्थात् दुःख (भव-  
भ्रमण) मिट जाता है।

